इश्क के बागानों में भटकते युवा

रामअवतार बैरवा

यह सच है कि पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा युवा भारत में हैं। बात गले उतरने में हिचक स्वाभाविक है। बात सच इसलिए है कि पूरी दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है, जहां छह ऋतुएं होती हैं। हालांकि भारत के कुछ हिस्से ऐसे भी हैं, जहां सारी ऋतुएं बेअसर रहती हैं पर किसी न किसी तरह कुछ महक अवश्य वहां तक पहुंच जाती है। कहते हैं ऋतु , मौसम या पानी आदमी के अनुकूल हो तो ये किसी को भी बूढ़ा नहीं होने देता। दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश होने के कारण आंकड़ों के मामले में तो भारत आगे है ही , यह इसलिए भी आगे है कि दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है , जहां के लोग रोज स्नान करते हैं । खाना खाते और स्नान करते समय अपने जूते उतार देते हैं। हर दिन हर व्यक्ति कम से कम एक किलोमीटर पैदल अवश्य चलते हैं। अधिकांश व्यक्ति शाकाहारी भोजन करते हैं। अधिकांश सुबह ब्रह्म मूहर्त में उठ जाते हैं। नित-प्रति पूजा करते हैं। ईश्वर में गहरी आस्था रखते हैं। सभी जीवों का आदर करते हैं। अवध में प्रभु की प्राण प्रतिष्ठा के समय सबने देखा ही है कैसे युवाओं का हुजूम उमड़ पड़ा था। ये शक्ति, भक्ति और विश्वास उनको युवा रखने में बहुत मददगार होता है।

एक महत्वपूर्ण बात यह भी कि यहां अपनी पत्नी अथवा दोस्त के अलावा किसी और से इजहारे- इश्क की सजा भी बहुत मंहगी होती है इसलिए चाहकर भी यहां का वासी ऐसा कदम नहीं उठा पाता । एक व्यक्ति यहां किसी के साथ ताउम्र साथ रहकर भी दूरी बनाए रखता है। यहां लड़की किसी से पहली बार मिलती है तो उसे अपने सपनों का राजकुमार मान बैठती है । पूरी दुनिया में फिल्म क्षेत्र में अगर सबसे बेहतरीन गीत लिखे गए हैं तो वो भारत में । अगर शायरी और कविता की दुनिया खंगाली जाए तो ग़ालिब, मीर , जफर, बशीर बद्र, तुलसी, कबीर, प्रसाद, गुप्त, अज्ञेय,निराला और दुष्यन्त कुमार से बेहतर शायर और कवि नहीं मिलते । ये सब मुहब्बत में चोट खाए आशिक भी हो सकते हैं। हाथ भर का फासला इनके जीवन में हमेशा बना रहा होगा। आज भी यहां मुहब्बत अपने परवान को तरसती है। कितने युवा आज बागानों की देहरी से वापस लौट आते हैं। उनका वसंत अमीरी-गरीबी और हजारों बंधनों में तड़पता रहता है । ऐसा नहीं कि मुहब्बत सच्ची नहीं होती, सच्ची है इसीलिए जाहिर नहीं होती, बेगानी मुहब्बत तो हमेशा परवान चढ़ी रहती है । आज की इंटरनेटीय दुनिया में मुहब्बत का भले कोई मोल न रह गया हो मगर उन

आशिकों की जिंदगी में झांका जाए, जो सबके सामने होकर भी बयां नहीं हो पाते। शायरी का असल जन्म ऐसे ही किनारे पर खड़े हुए होता है ।

"तू किसी रेल सी गुजरती है

मैं किसी पुल सा थरथराता हूं"

ये कहीं से भी काल्पनिक घड़न नहीं लगती। हकीकत के मंजर से निकले वासंती पुष्प हैं ।

"मैं नीर भरी दु:ख की घघरी " का दु:ख आज तक कोई नहीं जान पाया ।

निराला का काव्य भी वेदना से तपकर बना है, यहां मुहब्बत के लिए न समय है न सोच । तुलसी अगर भक्ति में रमते हैं तो निराला साहित्य के पाताल से शक्ति के मोती खंगालकर लाते हैं ।

'दु:ख ही जीवन की कथा रही,

क्या कहूं आज, जो कही नहीं।'

इसके इतर

"वो बड़ा रहीम ओ करीम है मुझे ये सिफ़त भी अता करे,

तुझे भूलने की दुआ करूं तो मिरी दुआ में असर न हो ।"

" तेरी नज़र से खुलता है, मेरे सीने का ताला,

न घर में बंदी हो जाऊं तुम नज़र मिलाते रहा करो।"

- असल मुहब्बत से निकले हुए

बेहतरीन शेर है। अगर शायरी की सच्ची दुनिया खंगाली जाए तो भारत सरीखी कहीं मुहब्बत नज़र आती है और न ही शायरी ।

रोहिणी, दिल्ली